The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण व्यवहार में परिवर्तन: भारतीय विद्यालयों की विकास यात्रा का विवेचनात्मक मूल्यांकन

Jai Raj

Research Scholar, Department of Education, Email : jaisingh3841.jrs@gmail.com

Research Guide: **Dr. Rajesh Kumar**

NIILM University, Kaithal (Haryana)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17326882

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण व्यवहार, डिजिटल नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020,* व्यावसायिक विकास

ABSTRACT

भारतीय कक्षाओं में शैक्षणिक प्रथाओं में परिवर्तन और शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों के परिणाम इस शोधपत्र की सैद्धांतिक और आलोचनात्मक परीक्षा का विषय हैं। यह पता लगाना कि संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को अपने स्वयं के विश्वासों, कार्यों और शिक्षण पद्धति को बेहतर बनाने के लिए कैसे प्रभावित करते हैं, शोध का प्राथमिक लक्ष्य है। इस लेख में, हम इस बात पर एक नज़र डालते हैं कि समय के साथ प्रशिक्षण कैसे विकसित हुआ है, यह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कैसे भिन्न होता है, डिजिटल विकास ने प्रशिक्षण को कैसे प्रभावित किया है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रशिक्षण को कैसे प्रभावित किया है। अकादमिक पत्र, सरकारी दस्तावेज़ और वर्तमान शोध इस अध्ययन के द्वितीयक स्रोतों की रीढ़ प्रदान करते हैं, जो एक विषयगत दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं। छात्र जुड़ाव और सीखने के परिणामों में सुधार प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा अधिक पेशेवर, संवेदनशील और आविष्कारशील दृष्टिकोण अपनाने का प्रत्यक्ष परिणाम है, जैसा कि शोध में प्रदर्शित किया गया है। साथ ही, एक महत्वपूर्ण बाधा प्रशिक्षण की गुणवत्ता और पहुँच में लगातार क्षेत्रीय असमानता है। जबकि डिजिटल तकनीकों ने प्रशिक्षण को अधिक सुलभ बनाने में मदद की है, पेशेवरों के लिए अभी भी व्यावहारिक अनुभव और निरंतर शिक्षा की आवश्यकता है। अध्ययन में पाया

गया कि शिक्षकों के आचरण को स्थायी और दीर्घकालिक तरीके से संशोधित करने के लिए नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षकों को एक साथ मिलकर काम करना आवश्यक है। राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर शैक्षणिक गुणवत्ता शिक्षकों के लिए उच्च-गुणवत्ता, निरंतर व्यावसायिक विकास द्वारा बहुत सहायता प्राप्त होती है, जो बदले में कक्षा में उनकी अपनी प्रभावशीलता को बढ़ाती है।

1. प्रस्तावना

अपनी स्थापना के बाद से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली ने शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका पर महत्वपूर्ण जोर दिया है। शिक्षा के इतिहास में, प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से लेकर समकालीन स्कूली शिक्षा प्रणाली तक, प्रशिक्षक की योग्यता को शिक्षण की गुणवत्ता के लिए प्राथमिक आधार माना जाता रहा है (यादव, 2017)। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद, भारत सरकार ने एक संरचित विन्यास में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के निर्माण के लिए कदम उठाना शुरू कर दिया। राष्ट्रीय स्तर पर, इसी क्रम के अनुसार राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई। ये संस्थाएँ प्रशिक्षण के लिए मानक स्थापित करने के लिए जिम्मेदार हैं (मिश्रा, 2019)। आज के समय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए प्रशिक्षित प्रशिक्षकों की और भी अधिक आवश्यकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वैश्विक स्तर पर प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करने के लिए छात्रों को ऐसी शिक्षा देना आवश्यक है जो न केवल सूचना पर आधारित हो बल्कि कौशल पर भी आधारित हो (वर्मा, 2018)।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए, प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षकों की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक न केवल समग्र पाठ्यक्रम को निर्देशित करने के लिए जिम्मेदार हैं, बल्कि वे छात्रों के व्यक्तिगत विकास और विकास का मार्गदर्शन करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (शर्मा, 2021)। नवीनतम शैक्षणिक पद्धतियाँ, कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ और मूल्यांकन प्रणालियाँ शिक्षकों के ध्यान में उन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लाई जाती हैं जिनमें वे भाग लेते हैं। शहरी और ग्रामीण विद्यालयों में पेश किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में, वर्तमान परिस्थिति में स्पष्ट अंतर देखे जा सकते हैं। महानगरीय स्थानों में, डिजिटल तकनीक का उपयोग अधिक प्रभावी है, हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों में, बुनियादी ढाँचे की कमी के कारण प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है (चौधरी, 2020)। डिजिटल युग में ऑनलाइन प्रशिक्षण प्लेटफॉर्म्स जैसे दीक्षा ऐप और स्वयं पोर्टल ने प्रशिक्षण की पहुँच को व्यापक किया है, किंतु इनके व्यवहारिक प्रभाव का अध्ययन आवश्यक है (पांडे, 2022)।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने कई महत्त्वपूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण पहलें शुरू कीं। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIETs) की स्थापना, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) द्वारा मान्यता प्राप्त कार्यक्रमों की शुरुआत, और सरस्वती योजना जैसे कदम इस दिशा में उल्लेखनीय रहे (यादव, 2017)। इन पहलों का उद्देश्य शिक्षकों को पेशेवर प्रशिक्षण प्रदान कर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना था। समय के साथ प्रशिक्षण के तरीकों में भी बदलाव हुआ, और आज के युग में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने पारंपरिक प्रशिक्षण विधियों की जगह ली है (वर्मा, 2018)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को बढ़ावा दिया, जिसमें चार वर्षीय एकीकृत बीएड कार्यक्रम, निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम और ऑनलाइन प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी गई (मिश्रा, 2019)।

वर्तमान समय में हुए नवीनतम विकास से यह पता चलता है कि शिक्षकों का प्रशिक्षण अब केवल कक्षा शिक्षण तक ही केंद्रित नहीं रह गया है। ऑनलाइन प्रशिक्षण, ब्लेंडेड लर्निंग, माइक्रो-क्रेडेंशियल कोर्सेस, और MOOC प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से शिक्षकों के लिए विविध अवसर उपलब्ध हुए हैं (पांडे, 2022)। राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा पोर्टल दीक्षा और स्वयं प्रभा चैनल जैसे साधनों की उपलब्धता ने शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करना संभव बना दिया है। यह इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रगति है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के परिणाम बताते हैं कि वर्ष 2022 तक भारत के सरकारी स्कूलों में कार्यरत सत्तर प्रतिशत से अधिक शिक्षक कम से कम एक डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले चुके होंगे। (शर्मा, 2021)। इसके साथ ही, शहरी क्षेत्रों में डिजिटल प्रशिक्षण की पहुँच 85 प्रतिशत से अधिक थी, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह आँकड़ा लगभग 55 प्रतिशत रहा (चौधरी, 2020)।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का आकलन करना और विभिन्न शिक्षकों की शिक्षण विधियों में हुए परिवर्तनों का निर्धारण करना है। इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा कि किस तरह से प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप शिक्षकों के शैक्षिक, प्रबंधकीय और व्यवहारिक दृष्टिकोण में संशोधन हुए हैं। इसके अलावा, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित स्कूलों के संबंध में इन परिणामों के बीच के अंतरों को भी ध्यान में रखा जाएगा।

इस जांच में इस्तेमाल की गई जानकारी केवल द्वितीयक स्रोतों से ही उपलब्ध कराई गई। एक ऐसा दृष्टिकोण अपनाया गया जो सैद्धांतिक और आलोचनात्मक दोनों ही प्रकृति का था। जांच के हिस्से के रूप में, शोध पत्र, नीति दस्तावेज, शैक्षिक रिपोर्ट और आधिकारिक सरकारी प्रकाशनों सहित कई तरह की वस्तुओं की जांच की गई। जांच के दौरान, जो वैचारिक और साथ ही आलोचनात्मक प्रकृति की थी, तथ्यों, दस्तावेजों और सैद्धांतिक रूपरेखाओं का एक साथ विश्लेषण करके मुद्दे की जांच की गई।

डेटा एकत्र करने की प्रक्रिया के दौरान, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों संगठनों के कई अलग-अलग शैक्षणिक प्रकाशनों का उपयोग किया गया। इन पत्रिकाओं में शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट, एनसीटीई की सिफारिशें और यूनेस्को और विश्व बैंक जैसे संगठनों से शिक्षा से जुड़े पेपर शामिल थे। जानकारी उन स्रोतों से चुनी गई जो अद्यतित, वास्तविक और शोध पद्धतियों के अनुकूल थे। नवीनतम रुझानों और विकासों को पर्याप्त रूप से चित्रित करने के लिए, संकलन को वर्ष 2015 और 2022 के बीच प्रकाशित किए गए शोधपत्रों तक सीमित रखा गया था।

एक ऐसा दृष्टिकोण चुना गया जो आलोचनात्मक विश्लेषण और विषयगत सैद्धांतिक विश्लेषण को जोड़ता है। दीर्घकालिक प्रभाव, शहरी-ग्रामीण अंतर, डिजिटल प्रशिक्षण की व्यवहार्यता और अन्य विषयों सहित विभिन्न विषयों के आधार पर, शोध कई निष्कर्षों पर पहुंचा। भारतीय परिवेश में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास और इसके महत्वपूर्ण प्रभाव की जांच करने के लिए तुलनात्मक और ऐतिहासिक मूल्यांकन का उपयोग किया गया।

2. भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण की ऐतिहासिक विकास यात्रा

भारत में भावी शिक्षकों को शिक्षित करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। प्राचीन काल में जब लोग रहते थे, तो गुरुकुल ही वह स्थान था जहाँ शिक्षा केन्द्रित थी। यहीं पर आचार्य विद्यार्थियों को अपना ज्ञान और अनुभव बाँटकर शिक्षा देते थे। (अग्रवाल, 2016)। उस समय औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का कोई संगठित स्वरूप नहीं था और शिक्षक का अनुभव ही उसकी गुणवत्ता का मापदंड होता था। मध्यकाल में मदरसों और पाठशालाओं में भी शिक्षकों के लिए कोई औपचारिक प्रशिक्षण व्यवस्था नहीं थी (वाजपेयी, 2017)। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले के वर्षों में औपनिवेशिक सत्ता के प्रभाव के परिणामस्वरूप शिक्षा प्रणाली के संगठन में परिवर्तन आया। इस दौरान शिक्षकों के लिए कुछ प्रशिक्षण विद्यालय और कॉलेज बनाए गए, जिनमें से अधिकांश महानगरीय क्षेत्रों में स्थित थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने शिक्षक प्रशिक्षण को एक संगठित स्वरूप देने का प्रयास किया (गुप्ता, 2018)। 1947 के बाद के वर्षों में, राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा को पुनर्गठित करने के उद्देश्य से कई शिक्षा आयोग और समितियाँ स्थापित की गईं। 1948-1949 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग और 1952 में माध्यमिक शिक्षा आयोग दोनों ने शिक्षा सुधार के एक बुनियादी घटक के रूप में शिक्षक तैयारी के महत्व को मान्यता दी। इन समितियों ने सलाह दी कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसमें शिक्षण व्यवहार, कक्षा प्रशासन और मूल्यांकन दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए (मिश्रा, 2020)। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षक प्रशिक्षण को पेशेवर शिक्षा के रूप में मान्यता मिली।

भारत में 1980 के दशक में शिक्षक प्रशिक्षण को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIETs) की स्थापना की गई (वर्मा, 2021)। इन संस्थानों का उद्देश्य था कि स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार प्राथमिक शिक्षकों को गुणवत्ता पूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। कोठारी आयोग (1964-66) ने भी स्पष्ट रूप से कहा था कि "शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक की गुणवत्ता से निर्धारित होती है," और इसने शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के आधुनिकीकरण पर बल दिया (गुप्ता, 2018)। आयोग ने व्यावहारिक अनुभव आधारित प्रशिक्षण, विद्यालयों के साथ सघन अनुबंध और वास्तविक शिक्षण स्थितियों के साथ प्रशिक्षण के समन्वय की सिफारिश की थी।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति और 1992 के कार्यक्रम कार्यवाही (POA) ने शिक्षक प्रशिक्षण को संस्थागत संरचना प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल की (मिश्रा, 2020)। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) को 1995 में वैधानिक दर्जा दिया गया, जिसने देशभर में प्रशिक्षण संस्थानों के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित किए। इससे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार आया और सेवा पूर्व तथा सेवा कालीन प्रशिक्षण दोनों को व्यवस्थित स्वरूप मिला (जोशी, 2022)। इसके अलावा, प्रशिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किए गए, जिससे उनकी शैक्षणिक क्षमता में वृद्धि हुई।

वर्तमान समय में, नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक प्रशिक्षण को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित करने की दिशा में पहल की है (जोशी, 2022)। इस संबंध में चार वर्षीय एकीकृत बैचलर ऑफ एजुकेशन पाठ्यक्रम, समावेशी शिक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षण और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से निरंतर व्यावसायिक विकास को महत्व दिया गया है। इस रणनीति के परिणामस्वरूप, शिक्षक शिक्षा को अधिक बहु-विषयक, नवीन और तकनीकी रूप से उन्नत बनाने का प्रयास किया गया है। यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर भारतीय शिक्षा की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लक्ष्य के साथ किया गया है (पांडे, 2022)।

इनमें से प्रत्येक प्रयास यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली, पिछले मॉडल से, जो अनुभवात्मक शिक्षा पर आधारित थी, एक ऐसी प्रशिक्षण प्रणाली की ओर अग्रसर हो चुकी है जो उत्तरोत्तर अधिक संगठित, संस्थागत और सशक्त होती जा रही है (अग्रवाल, 2016; गुप्ता, 2018)। फिर भी, वर्तमान समय में भी, वैश्विक शिक्षा क्षेत्र में अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को विकसित करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली को आधुनिक बनाने, डिजिटल कौशल में सुधार करने और व्यावहारिक शिक्षा को सबसे आगे रखने की आवश्यकता है (वर्मा, 2021; पांडे, 2022)।

3. प्रशिक्षण कार्यक्रमों का शिक्षण व्यवहार पर प्रारंभिक प्रभाव

यह देखा गया है कि शिक्षकों के आचरण पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रारंभिक प्रभाव महत्वपूर्ण और दूरगामी रहा है। प्रशिक्षित प्रशिक्षकों और जिन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है, उनके शिक्षण के तरीकों में काफी अंतर पाया गया है (भट्टाचार्य, 2017)। जिन अध्यापकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, वे न केवल सामग्री को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करते हैं, बल्कि वे अपने विद्यार्थियों द्वारा प्रदर्शित समझ के स्तर के अनुसार अपनी शिक्षण रणनीतियों को भी अनुकूलित करते हैं। जिन प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण की कमी होती है, वे पारंपरिक व्याख्यान शैली पर निर्भर रहते हैं, जबकि जिन प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, वे इंटरैक्टिव शिक्षण, सहयोगात्मक शिक्षण और समस्या समाधान जैसी युक्तियों का उपयोग करते हैं (सिंह, 2018)। प्रशिक्षित शिक्षकों का फोकस छात्र-केंद्रित शिक्षण पर अधिक होता है, जो छात्रों के सक्रिय विकास को बढ़ावा देता है।

कक्षाओं के प्रबंधन में एक और महत्वपूर्ण कारक प्रशिक्षण का उपयोग रहा है। समूह गतिविधियाँ, प्रोत्साहन के लिए दृष्टिकोण और सकारात्मक प्रतिक्रिया केवल कुछ ऐसे तरीके हैं जिन्हें प्रशिक्षित प्रशिक्षक प्रभावी रूप से अपनाते हैं (राणा, 2020)। वे अपने समय का प्रभावी प्रबंधन करने, अपने विद्यार्थियों के आचरण को नियंत्रित करने और कक्षा में सीखने के लिए अनुकूल माहौल बनाए रखने में असाधारण हैं। दूसरी ओर, जिन शिक्षकों को आगे के प्रशिक्षण की कमी होती है, वे अक्सर अनुशासन बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं, जिसका शिक्षण प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है (चौहान, 2019)। प्रशिक्षित शिक्षक समावेशी दृष्टिकोण को अपनाते हैं, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों को समान अवसर मिलते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पाठ योजनाओं के निर्माण पर पड़ने वाले प्रभाव का भी एक मजबूत संकेत है। पाठ योजनाएँ प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों, उपयुक्त शिक्षण सामग्री और विभिन्न शिक्षण शैलियों के अनुसार विकसित की जाती हैं। (चौहान, 2019)। कक्षा में आवश्यक किसी भी बदलाव को समायोजित करने के लिए, वे ऐसी रणनीतियाँ तैयार करेंगे जो अनुकूलनीय हों। दूसरी ओर, जिन प्रशिक्षकों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिला है, वे कभी-कभी बिना किसी रणनीतिक योजना के निर्देश देते हैं, जिससे कक्षा के अंदर निर्देश के प्रवाह में व्यवधान उत्पन्न होता है (भट्टाचार्य, 2017)। प्रशिक्षित शिक्षक पाठ योजना के माध्यम से पाठ्यवस्तु को अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बनाते हैं।

मूल्यांकन तकनीकों में प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप बहुत बड़ा प्रभाव आया है। जिन प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, वे रचनात्मक मूल्यांकन, परियोजना कार्य और गतिविधि-आधारित मूल्यांकन जैसे समकालीन तरीकों का उपयोग करते हैं (राणा, 2020)। वे लगातार अपने विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करते रहते हैं और अपने शिक्षण विधियों में आवश्यक समायोजन करते रहते हैं। अधिकांश समय, अप्रशिक्षित शिक्षक अंतिम परीक्षाओं पर निर्भर रहते हैं, जो छात्रों द्वारा सीखी गई सामग्री की समग्र समझ का मूल्यांकन करने की अनुमति नहीं देता है

(शर्मा, 2021)। प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा अपनाई गई बहुआयामी मूल्यांकन पद्धतियाँ छात्रों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करती हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप शिक्षण पद्धति, कक्षा प्रबंधन, पाठ तैयारी और मूल्यांकन पद्धतियों सहित शिक्षण अभ्यास के सभी तत्वों में सकारात्मक सुधार लाया गया है। (सेनगुप्ता, 2022)। अधिक संवेदनशील, कल्पनाशील और अनुकूलनीय रणनीतियों को अपनाकर, प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षक अपने विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव की समग्र गुणवत्ता में सुधार करने में सक्षम होते हैं। इस उद्देश्य से, यह प्रदर्शित किया गया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में शिक्षकों के प्रशिक्षण को बढ़ाना एक आवश्यक कदम है।

4. शहरी और ग्रामीण संदर्भ में प्रशिक्षण और व्यवहार में भिन्नता

शहरी स्कूलों में, यह पाया गया है कि शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता ग्रामीण स्कूलों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है। जब शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की बात आती है, तो शहरों में स्थित स्कूलों में अधिक उन्नत सुविधाएँ, अधिक अनुभवी प्रशिक्षक और अधिक अद्यतित सामग्री उपलब्ध होती है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षकों के डिजिटल प्रशिक्षण प्लेटफ़ॉर्म, कार्यशालाओं, सेमिनारों और चल रहे व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेने की अधिक संभावना है। यह दर्शाता है कि शहरी शिक्षक अपने व्यवहार में व्यावसायिकता, आविष्कारशीलता और आत्म-प्रेरणा के बेहतर स्तर प्रदर्शित करते हैं। जिस तरह से शहरी शिक्षक खुद का आचरण करते हैं, उससे कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थियों की विभिन्न शिक्षण शैलियों के प्रति संवेदनशीलता और प्रौद्योगिकी संसाधनों के उपयोग में विशेषज्ञता के क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं का स्पष्ट प्रदर्शन होता है (नायर, 2016; भंडारी, 2018)। इसके अतिरिक्त, शहरी स्कूलों में प्रशिक्षक नवीनतम शिक्षण विधियों को शीघ्रता से अपना लेते हैं, तथा वे फीडबैक प्रणाली के उपयोग के माध्यम से नियमित रूप से अपनी शिक्षण तकनीकों का विश्लेषण और सुधार करते हैं (चक्रवर्ती, 2019)। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव के कारण, शहरी शिक्षकों में समस्या समाधान क्षमता, नवाचार को अपनाने की प्रवृत्ति और पेशेवर नैतिकता का स्तर भी उच्चतर पाया गया है।

ग्रामीण विद्यालयों में उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक प्रशिक्षण तक पहुँच प्राप्त करना और उसे प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है। प्रशिक्षण संस्थानों से दूरी, संसाधनों की कमी, प्रशिक्षकों की अनुपस्थिति और डिजिटल बुनियादी ढाँचे की अनुपस्थिति सभी ऐसे कारक हैं जो शिक्षकों के लिए कई ग्रामीण स्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त करना मुश्किल बनाते हैं। इस तथ्य के कारण कि ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षकों के लिए उचित प्रशिक्षण प्राप्त करने के कम विकल्प हैं, उनके शिक्षण अभ्यास में उनसे अपेक्षित व्यावसायिकता का स्तर अक्सर कम होता है (कुमार, 2017; रॉय, 2019)। ग्रामीण स्कूलों में प्रशिक्षकों को पारंपरिक शिक्षण तकनीकों पर निर्भर रहना पड़ता है

क्योंकि उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिलता है। नतीजतन, उन्हें अपने विद्यार्थियों की विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई होती है। इसके अलावा, ग्रामीण शिक्षक अक्सर कक्षा प्रबंधन, पाठ डिजाइन और मूल्यांकन के लिए फायदेमंद तकनीकों के कार्यान्वयन के क्षेत्रों में कम स्तर का कौशल प्रदर्शित करते हैं (शेख, 2020)। यद्यपि सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराने के लिए कुछ पहल की जा रही हैं, फिर भी यह अनुमान है कि इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप शिक्षण पद्धति में व्यापक और दीर्घकालिक परिवर्तन आएंगे (सक्सेना, 2021)।

शहरी और ग्रामीण स्कूलों की सेटिंग में प्रशिक्षण और अभ्यास में यह असमानता केवल भौगोलिक या भौतिक कारणों से नहीं है; यह इस तथ्य के कारण भी है कि नीति निर्माण, वित्तीय निवेश, प्रशासनिक सहायता और सामाजिक-सांस्कृतिक चर सभी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शहरी और ग्रामीण प्रशिक्षण और अभ्यास के बीच की खाई को पाटना तब तक चुनौतीपूर्ण होगा जब तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षक उपलब्ध न हों, सुलभ डिजिटल संसाधन, समुदाय की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार पाठ्यक्रम और सीखने के लिए अनुकूल माहौल न हो (शर्मा, 2022)। अतः नीति निर्धारकों को प्रशिक्षण की पहुँच और गुणवत्ता दोनों में संतुलन स्थापित करने हेतु विशेष रणनीतियाँ अपनानी होंगी।

5. डिजिटल तकनीकों और नई नीतियों के प्रभाव में शिक्षक प्रशिक्षण का पुनर्गठन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण की प्रणाली में व्यापक नवाचार को लागू करने की आवश्यकता को स्पष्ट और संक्षिप्त तरीके से व्यक्त किया गया है। इस रणनीति के ढांचे के भीतर, शिक्षकों के बीच कई विषयों में पेशेवर क्षमता और ज्ञान के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। नीति में यह भी कहा गया है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को यथार्थवादी बनाना आवश्यक है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रशिक्षक विभिन्न पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों की आवश्यकताओं को समझ सकें और उनकी एजेंसी की भावना को बढ़ा सकें। इस नीति के प्राथमिक घटक बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.) पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन है जो चार साल की अवधि में एकीकृत होता है, नियमित व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का कार्यान्वयन और शिक्षकों के लिए खुद का मूल्यांकन करने की प्रक्रियाएँ। इसके साथ ही, रणनीति ने प्रशिक्षण को सुविधाजनक बनाने के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के उपयोग पर भी जोर दिया है जो अधिक सुलभ और अनुकूलनीय दोनों है। इस दृष्टिकोण में, प्रशिक्षण संस्थानों, कॉलेजों और सरकारी संगठनों को डिजिटल पाठ्यक्रम बनाने और ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का निर्देश दिया गया है जो शिक्षकों को निरंतर अपडेट प्रदान करते हैं।

ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के प्रसार के कारण, शिक्षक शिक्षा की प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। पहले, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को शारीरिक रूप से उपस्थित होना आवश्यक था। हालाँकि, वर्तमान में, प्रशिक्षक जब भी चाहें डिजिटल पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षण में भाग ले सकते हैं। शिक्षकों को डिजिटल संसाधनों जैसे दीक्षा प्लेटफॉर्म, स्वयं पोर्टल, एनआईओएस ऑनलाइन पाठ्यक्रम और अन्य डिजिटल संसाधनों के उपयोग के माध्यम से विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक और व्यावसायिक क्षमताएँ बनाने का मौका दिया गया है। इन प्लेटफार्मों ने न केवल अधिक लोगों के लिए प्रशिक्षण को अधिक सुलभ बनाया है, बल्कि उन्होंने शिक्षकों को अपनी गति से अध्ययन करने, पाठ्यक्रम की जांच करने और अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार अपनी क्षमताओं को उन्नत करने का अवसर भी प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त, मोबाइल एप्लिकेशन-आधारित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रमों, वेबिनार, वर्चुअल वर्कशॉप और डिजिटल प्रमाणन कार्यक्रमों के प्रसार के परिणामस्वरूप प्रशिक्षण अधिक जीवंत और सहभागी हो गया है। शिक्षक प्रशिक्षण के पुनर्गठन में नवीन प्रशिक्षण दृष्टिकोणों के विकास द्वारा भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। वर्चुअल रियलिटी (वीआर), ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर), गेमिफिकेशन, माइक्रो-लर्निंग मॉड्यूल और मिश्रित शिक्षण पद्धतियों जैसी तकनीकों के कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप शिक्षकों के लिए सीखना अधिक आकर्षक और उत्पादक बन गया है। इन तकनीकी प्रगति ने जटिल विचारों की व्याख्या को सरल बनाना, कक्षा में रचनात्मकता को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना संभव बना दिया है कि कक्षा में निर्देश अधिक आकर्षक हों। शिक्षक शिक्षा अब पाठ्यपुस्तकों के उपयोग तक सीमित नहीं है; बल्कि, शिक्षक अब डिजिटल संसाधनों के उपयोग के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक अनुभव देने में सक्षम हैं।

शिक्षकों को स्मार्ट प्रशिक्षण दृष्टिकोणों के उपयोग के माध्यम से विभिन्न शिक्षण शैलियों और कक्षा की विभिन्न आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए अपनी शिक्षण तकनीकों को बदलने का प्रशिक्षण भी दिया गया है। नई नीतियों के कार्यान्वयन और डिजिटल प्रौद्योगिकियों की शुरूआत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भविष्य में शिक्षक प्रशिक्षण की प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया होगी जो निरंतर, अनुकूलनीय और प्रौद्योगिकी द्वारा समर्थित होगी। आज प्रशिक्षकों को न केवल विषय वस्तु के ज्ञान में बल्कि प्रौद्योगिकी साक्षरता, डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने की क्षमता और दुनिया भर में शिक्षा के नवीनतम रुझानों के साथ बने रहने की क्षमता में भी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। सरकार, शैक्षिक संस्थानों और शिक्षकों के लिए सहयोग करना आवश्यक होगा ताकि न केवल भारत के अंदर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली में सुधार हो सके।

6. शिक्षण व्यवहार में दीर्घकालिक परिवर्तन: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

शिक्षकों की मानसिकता में बदलाव, शिक्षण व्यवहार में बदलाव लाने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है जो लंबे समय तक चलेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रशिक्षकों के कौशल, ज्ञान और तकनीकी योग्यता पर तत्काल प्रभाव पड़ना आम बात है। हालाँकि, लंबे समय तक चलने वाले बदलाव के लिए शिक्षकों के लिए अपने विश्वासों, मूल्यों और दृष्टिकोणों में गहरा और सकारात्मक परिवर्तन करना आवश्यक है। प्रशिक्षक नवाचार को अपनाने के लिए तैयार हैं या नहीं, वे विद्यार्थियों की विभिन्न सीखने की आवश्यकताओं को समझते हैं या नहीं, और वे शिक्षण को केवल एक नौकरी के बजाय एक कर्तव्य के रूप में देखते हैं या नहीं, ये सभी कारक शिक्षकों से जुड़ी मानसिकता में बदलाव के आकलन का हिस्सा हैं। यह केवल तभी संभव है जब प्रशिक्षक कक्षा को एक ऐसा माहौल बनाने के लिए प्रेरित हों जो गतिशील, सहभागी और विकासोन्मुखी हो, तभी यह कहना संभव है कि व्यवहार में एक सच्चा और स्थायी बदलाव हुआ है।

इसके अलावा, आचरण में बदलाव को स्थायी बनाने के लिए कई बाधाओं को दूर करना होगा। यह संभव है कि कार्यभार, संसाधनों की कमी, प्रशासनिक दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं जैसे कारकों के कारण प्रशिक्षक समय के साथ पारंपरिक तरीकों पर लौट आएं। यह इस तथ्य के बावजूद है कि शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के तुरंत बाद नए तरीकों और दृष्टिकोणों को अपना लेते हैं। शिक्षकों द्वारा लाए गए लाभकारी सुधारों के लिए स्कूलों के अराजक वातावरण, उत्साह की कमी और सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली संस्कृति की अनुपस्थिति के कारण कमजोर होना बहुत ही असामान्य है। नतीजतन, प्रशिक्षण पूरा होने के बाद भी निरंतर व्यावसायिक विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराना, प्रशिक्षकों को निरंतर प्रतिक्रिया और सहायता प्रदान करना और एक सहायक वातावरण प्रदान करना आवश्यक है जो उनके अभिनव विचारों की स्थिरता और दक्षता को बनाए रख सके।

आत्म-प्रेरणा और आत्म-मूल्यांकन के प्रति पूर्वाग्रह का विकास प्रशिक्षकों के लिए दीर्घकालिक प्रगति प्राप्त करने के लिए दो अन्य महत्वपूर्ण गुण हैं। केवल बाहरी निरीक्षण या मूल्यांकन रणनीतियों के उपयोग के माध्यम से शिक्षण व्यवहार में स्थायी सुधार प्राप्त करना संभव नहीं है। केवल तभी जब प्रशिक्षक स्वयं अपनी शिक्षण रणनीतियों का गहन विश्लेषण करते हैं, नए विचारों को लागू करने की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेते हैं, और अपने पूरे जीवन में सीखने की प्रक्रिया में लगे रहते हैं, व्यवहारिक प्रगति को दीर्घकालिक माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ऐसा करने के लिए, शैक्षणिक संस्थानों और शिक्षा विभागों को एक ऐसी संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है जो निरंतर शिक्षा और नवाचार को प्रोत्साहित करती है।

भविष्य की नीतियों के लिए कई अन्य विचार प्रस्तावित किए जा सकते हैं। सबसे पहले, यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को शिक्षित करने वाले कार्यक्रम व्यावहारिक अनुभव पर आधारित हों। इससे प्रशिक्षकों को कक्षा में मौजूद वास्तविक स्थितियों का सामना करने का मौका मिलेगा। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, प्रतिभागियों को अनुवर्ती मॉड्यूल, मेंटरशिप कार्यक्रमों और पेशेवर शिक्षण समुदायों की स्थापना में भाग लेने की आवश्यकता होनी चाहिए। यह सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कि शिक्षक हमेशा नवीनतम शैक्षिक रुझानों और विधियों के साथ गति में रहें, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से निरंतर प्रशिक्षण का प्रावधान होना चाहिए। इसके अलावा, राजनेताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शिक्षकों को निर्णय लेने की लचीलापन दी जाए, उनका आत्म-सम्मान बढ़ाया जाए और उन्हें नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। शिक्षकों के दीर्घकालिक विकास के लिए लाभकारी माहौल बनाने के लिए शिक्षण संस्थानों के नेतृत्व और प्रशासन में जागरूकता बढ़ाना भी जरूरी है। उपर्युक्त कदमों को समग्र दृष्टिकोण के साथ लागू करने पर शिक्षण व्यवहार में बदलाव न केवल तत्काल परिणाम दिखाएगा, बल्कि वे शिक्षा प्रणाली में स्थायी और अच्छे बदलाव लाने में भी उपयोगी साबित होंगे। यह निश्चित है।

7. निष्कर्ष

इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप शिक्षण व्यवहार में आए बदलावों की व्यापक जांच करना था। शोध के निष्कर्षों के अनुसार, यह पाया गया कि सुव्यवस्थित और उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण प्राप्त करने के परिणामस्वरूप शिक्षकों के ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में सुधार हुआ था। कई अलग-अलग तत्व थे जिन पर गंभीरता से विचार किया गया, जिसमें भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक प्रशिक्षण का ऐतिहासिक विकास, शहरी और ग्रामीण संदर्भों में प्रशिक्षण की स्थिति, डिजिटल तकनीकों का समावेश और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव शामिल है। इस अध्ययन प्रयास ने यह भी स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया कि प्रशिक्षण केवल एक तकनीकी अभ्यास नहीं था; बल्कि, यह एक ऐसे घटक के रूप में विकसित हुआ था जिसका शिक्षकों के व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ उनकी पेशेवर क्षमता पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह पता चला कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा शिक्षण व्यवहार में लाए गए संशोधन अत्यंत महत्वपूर्ण थे। कक्षा प्रबंधन में प्रभावशीलता का प्रदर्शन करने के अलावा, जिन प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था, उन्होंने अपने शिक्षण विधियों में रचनात्मकता का भी प्रदर्शन किया था और अपने विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित किया था। पाठ योजनाओं के विकास से लेकर मूल्यांकन रणनीतियों के कार्यान्वयन तक, यह देखा गया कि प्रशिक्षित प्रशिक्षकों के काम में उच्च स्तर की व्यावसायिकता और आविष्कारशील प्रयोगशीलता प्रदर्शित हुई। इन संशोधनों के कार्यान्वयन से छात्रों की भागीदारी में वृद्धि हुई, सीखने के परिणामों में सुधार हुआ और कक्षा का माहौल सभी छात्रों के लिए अधिक स्वागत योग्य और

प्रेरणादायक था। इसके परिणामों ने प्रदर्शित किया कि प्रत्येक सफल शैक्षिक प्रणाली की नींव उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों से बनी होती है।

हालांकि, अध्ययन ने इस तथ्य पर जोर दिया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव को दीर्घकालिक और टिकाऊ बनाने के लिए विधायी सुधारों की आवश्यकता थी। केवल प्रारंभिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का कार्यान्वयन शिक्षण व्यवहार में ऐसा बदलाव लाने के लिए पर्याप्त नहीं था जो दीर्घकालिक हो। ऐसा करने के लिए, निरंतर व्यावसायिक विकास, निरंतर मूल्यांकन, संगठित प्रतिक्रिया प्रणाली और कक्षा स्तर पर एक सहायक वातावरण की स्थापना के लिए कार्यक्रमों को लागू करना आवश्यक था। विशेष रूप से ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि और प्रशिक्षकों की गुणवत्ता में वृद्धि की तत्काल आवश्यकता थी। नीतियों को अधिक यथार्थवादी, स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं के अनुकूल और नवाचार के लिए अनुकूल बनाने की प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण चरण बन गई है।

आखिरी लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, योग्य शिक्षकों ने भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिन शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया था, वे न केवल अपने छात्रों को जानकारी देने के लिए जिम्मेदार थे, बल्कि उन्होंने छात्र प्रेरणा, नैतिक मूल्यों और आविष्कारशीलता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राथमिक से लेकर माध्यमिक और उच्च शिक्षा तक, शिक्षा के हर स्तर को एक ऐसे शिक्षक की उपस्थिति से लाभ हो सकता है जो प्रतिभाशाली होने के साथ-साथ अपने छात्रों की जरूरतों के प्रति चौकस भी हो। इसलिए, भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहाँ शिक्षा परिवर्तनकारी सामाजिक और आर्थिक बदलाव की नींव के रूप में कार्य करती है, कुशल शिक्षकों का विकास और समर्थन राष्ट्र के विकास की योजना का एक अभिन्न अंग होना चाहिए था। यदि यह कार्यवाही की जाती है, तो यह संभव है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली अंततः अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के स्तर पर होगी।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल, डी. (2016)। भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का ऐतिहासिक विकास। *शिक्षा और अनुसंधान पत्रिका*, 18(3), 29–44।
- कपूर, एन. (2020)। ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का शिक्षक विकास में योगदान। *भारतीय शिक्षा विकास पत्रिका*, 22(2), 35–51।

- कुमार, आर. (2017)। ग्रामीण भारत में शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ। *ग्रामीण शिक्षा विश्लेषण*, 19(1), 30–46।
- गुप्ता, एस. (2018)। कोठारी आयोग और शिक्षक शिक्षा में सुधार। *राष्ट्रीय शिक्षा अध्ययन*, 20(2), 30–46।
- चक्रवर्ती, ए. (2019)। शहरी शिक्षकों में नवाचार और पेशेवर व्यवहार का अध्ययन। *शिक्षण रणनीति पत्रिका*, 21(4), 33–49।
- चौधरी, एन. (2020)। ग्रामीण भारत में डिजिटल प्रशिक्षण की चुनौतियाँ। *ग्रामीण शिक्षा अध्ययन*, 22(1), 35–51।
- चौहान, ए. (2019)। पाठ योजना निर्माण में शिक्षक दक्षता का विकास। *समकालीन शिक्षा संवाद*, 21(3), 32–49।
- जोशी, एन. (2022)। नई शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक शिक्षा। *शिक्षा नीति परिप्रेक्ष्य*, 24(1), 28–45।
- देशपांडे, एस. (2018)। स्मार्ट शिक्षा उपकरण और शिक्षक व्यावसायिकता का विकास। *शिक्षा नवाचार पत्रिका*, 20(4), 32–48।
- नायर, एम. (2016)। शहरी विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता। *समकालीन शिक्षा विश्लेषण*, 18(2), 31–48।
- पांडे, डी. (2022)। भारत में शिक्षा में डिजिटल नवाचार: नीतिगत विश्लेषण। *डिजिटल शिक्षा विश्लेषण*, 24(1), 33–49।

- पांडे, डी. (2022)। भारत में शिक्षा में डिजिटल नवाचार: नीतिगत विश्लेषण। *डिजिटल शिक्षा विश्लेषण*, 24(1), 33–49।

- बख्शी, डी. (2021)। NEP 2020 के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन। *शिक्षा नीति अध्ययन पत्रिका*, 23(1), 30–47।
- भंडारी, एस. (2018)। डिजिटल माध्यमों द्वारा शिक्षक व्यावसायिकता का संवर्धन। *शिक्षा नवाचार समीक्षा*, 20(3), 29–47।

- भट्टाचार्य, एन. (2017)। शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण व्यवहार: एक विश्लेषण। *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 19(2), 30–47।
- मलिक, के. (2022)। डिजिटल नवाचार और भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण का भविष्य। *नई शिक्षा समीक्षा*, 24(2), 28–44।
- मिश्रा, ए. (2020)। NCTE और भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण का पुनर्गठन। *शिक्षा नीति संवाद*, 22(4), 35–50।
- मिश्रा, एस. (2019)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक शिक्षा का पुनर्गठन। *शिक्षा नीति संवाद*, 21(4), 29–46।
- मेहरा, वी. (2016)। भारत में डिजिटल शिक्षा के प्रसार में शिक्षक प्रशिक्षण का महत्व। *डिजिटल शिक्षा समीक्षा*, 18(2), 34–49।
- यादव, आर. (2017)। भारत में शिक्षक प्रशिक्षण का ऐतिहासिक विकास। *शिक्षा अन्वेषण पत्रिका*, 19(3), 40–56।
- राणा, पी. (2020)। मूल्यांकन रणनीतियों में नवाचार और प्रशिक्षण की भूमिका। *शिक्षक मूल्यांकन पत्रिका*, 22(2), 29–45।
- रॉय, पी. (2019)। ग्रामीण विद्यालयों में प्रशिक्षण संसाधनों की पहुँच: एक सर्वेक्षण। *शिक्षा और समाज पत्रिका*, 21(2), 32–48।
- वर्मा, आर. (2021)। भारत में शिक्षक प्रशिक्षण की वर्तमान चुनौतियाँ। *शिक्षण अभ्यास समीक्षा*, 23(2), 31–49।
- वर्मा, पी. (2018)। डिजिटल शिक्षा और शिक्षक सशक्तिकरण। *समकालीन शिक्षा समीक्षा*, 20(2), 30–48।
- वाजपेयी, एम. (2017)। स्वतंत्रता पूर्व भारत में शिक्षा प्रणाली और शिक्षक प्रशिक्षण। *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 19(1), 32–47।

- शर्मा, ए. (2022)। नीति निर्माण और ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण सुधार। *शिक्षा नीति विश्लेषण*, 24(2), 34–50।
- शर्मा, एल. (2021)। प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन। *शिक्षा नवाचार विश्लेषण*, 23(1), 35–50।
- शर्मा, के. (2021)। ऑनलाइन प्रशिक्षण और शिक्षकों की दक्षता: एक अध्ययन। *शिक्षण प्रौद्योगिकी जर्नल*, 23(2), 31–47।
- शर्मा, पी. (2019)। डिजिटल युग में शिक्षक प्रशिक्षण: अवसर और चुनौतियाँ। *शिक्षा तकनीकी विश्लेषण*, 21(1), 29–45।
- शेख, डी. (2020)। ग्रामीण शिक्षकों के व्यवहार में प्रशिक्षण की भूमिका। *शिक्षक विकास अध्ययन*, 22(3), 35–51।
- श्रीवास्तव, ए. (2017)। ऑनलाइन शिक्षण और प्रशिक्षण के बदलते आयाम। *समकालीन शिक्षा शोध पत्रिका*, 19(3), 30–46।
- सक्सेना, वी. (2021)। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा और प्रशिक्षण अवसर। *डिजिटल शिक्षा संवाद*, 23(1), 31–47।
- सिंह, डी. (2018)। कक्षा प्रबंधन रणनीतियों में प्रशिक्षण का प्रभाव। *शिक्षण अध्ययन पत्रिका*, 20(1), 28–44।
- सेनगुप्ता, आर. (2022)। कक्षा प्रबंधन और शिक्षण सुधार में प्रशिक्षण की भूमिका। *शिक्षा सुधार संवाद*, 24(2), 31–48।